राष्ट्रपति भवन में साहित्य अकादमी द्वारा साहित्यिक सम्मेलन का आयोजन

आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता : द्रौपदी मुर्मु

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी और राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आज 'कितना बदल चुका है साहित्य? विषयक दो दिवसीय साहित्यिक सम्मिलन का उद्घाटन भारत की माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र, नई दिल्ली में किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि 140 करोड़ देशवासियों के हमारे परिवार में अनेक भाषाएँ और अनगिनत बोलियाँ है तथा साहित्यिक परंपराओं की असीम विविधता है। लेकिन इस विविधता में भारतीयता का स्पंदन महसूस होता है। भारतीयता का यही भाव हमारे देश की सामूहिक चेतना में रचा-बसा है। मैं मानती हूँ कि सभी भाषाओं में लिखित साहित्य मेरा ही साहित्य है। उन्होंने गोपबंधु दास, रवींद्रनाथ ठाकुर, फकीरमोहन सेनापति, गंगाधर मेहर, प्रतिभा राय आदि को संदर्भित करते हुए कहा कि आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता। साहित्य से प्रेरणा लेकर मनुष्य सपने देखता है और उन्हें साकार करता है। कार्यक्रम के आरंभ में संस्कृति मंत्रालय की विशेष सचिव और वित्तीय सलाहकार श्रीमती रंजना चौपड़ा ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करने वाली संस्थाओं में साहित्य अकादेमी एक अग्रणी तथा व्यापक प्रभाव वाली संस्था है। पिछले कुछ वर्षों में अकादेमी ने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं और अपनी सक्रियता से सबका ध्यान आकर्षित किया है। यह सम्मिलन भी अकादेमी की विशिष्ट सक्रियता का उल्लेखनीय उदाहरण है। उन्होंने आशा व्यक्त की यह सम्मिलन साहित्य के बदलावों के प्रति हमारी दृष्टि को और अधिक व्यापक करेगा। कल पूरे दिन 'भारत की स्त्रीवादी साहित्य- नए आधार की तलाश में', 'साहित्य में परिवर्तन बनाम परिवर्तन का साहित्य' एवं 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय साहित्य की नई दिशाएँ' विषयक तीन सत्रों में साहित्य के बदले स्वरूपों पर प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों एवं विद्वानों द्वारा विचार-विमर्श होगा। अंत में देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती के अवसर पर हिमांशु वाजपेयी तथा प्रज्ञा शर्मा द्वारा अहिल्याबाई गाथा की प्रस्तुति की जाएगी।